Original Research Paper Education

छात्राध्यापकों का अध्यापन के प्रति आत्मबोध का अध्ययन

डॉ. विष्णु कुमार सहायक प्रोफेसर शिक्षा विभाग जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ–341306 (राज.)

ABSTRACT व्यक्ति अनेक संवेग, मनोवेग, अन्तर्द्वन्द्वों का समूह होता है। वह प्रत्येक कार्य से अनुभव प्राप्त करता है। चाहे अनुभव अच्छा हो या बुरा, वह उन अनुभवों का प्रयोग अपने आगामी जीवन में करता है। अनेक छात्राध्यापकों से वार्तालाप करने पर यह जानने में आया कि अधिकतर छात्राध्यापक प्रारम्भ में अध्यापन–व्यवसाय को अपनाने के लिये कभी आर्थिक कारणों, कभी अध्यापक व्यवसाय के प्रति लगाव से ही तैयार होते हैं लेकिन जब वे महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं और शिक्षण प्रशिक्षण कार्य आरम्भ होता है तो वे एक अनोखे अनुभव से गुजरते है। जब वे कक्षा में जाते हैं और अध्यापक की हैसियत से पढ़ाते हैं तो उन्हें अपनी कमियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। वह उन्हें सुधारने की कोशिश करते हैं। प्रत्येक छात्राध्यापक की एक ही आन्तरिक इच्छा करती है कि वह कक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे इससे उसमें परिपक्वता विकसित होती है। विचारों में प्रौढ़ता दिखाई देती है। साथ ही वह कक्षा में जाने से पहले अन्य छात्राध्यापकों से वार्तालाप करता है, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करता है कि वे कैसे पढ़ा रहे हैं। शिक्षण में उनसे कौन–कौन सी गलतियां हो रही है, उनकी स्थिति से वह अपने स्वयं की स्थिति का आंकलन करता है जिससे उसे धीरे–धीरे यह अवबोध होने लगता है कि उसकी स्थिति कैसी है और दूसरों के उसके बारे में कौन–कौन से विचार है? अतः वह सब छात्राध्यापकों से अच्छा पढ़ाने की कोशिश करता है। अर्थात् व्यक्ति अपनी क्षमताओं का कमजोरियों का आंकलन करने में समर्थ होता है और कमजोरियों को दूर करने की कोशिश करता है। प्रसिद्ध शिक्षाविद् कैटल ने कहा है कि आत्म–प्रत्यय व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु है।

KEYWORDS : Oral cancer, Candida, Antifungal agents, radiotherapy

अध्ययन के उद्देश्य :

1. छात्राध्यापकों के आत्मबोध का अध्ययन।
2. छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध का अध्ययन।
3. छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :

1. छात्राध्यापकों का आत्मबोध सकारात्मक पाया जाता है।
2. छात्राध्यापिकाओं का आत्मबोध सकारात्मक पाया जाता है।
3. छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श :

यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति से जयपुर शहर के बी.एड. कॉलेज से 60 छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया, जिसमें 40 छात्राध्यापक एवं 20 छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

डॉ. जी.पी. शेरी, आर.पी. वर्मा व पी.के. गोस्वामी द्वारा निर्मित आत्मबोध परीक्षण। आत्मबोध परीक्षण में 48 कथन है जो स्व–बोध की आठ विभिन्न दिशाओं में फलांकन देते हैं। इस प्रकार वर्तमान परीक्षण आठ विभिन्न क्षेत्रों में आत्मबोध का मापन करता है। परीक्षक के कथन बहुत ही सरल व स्वयं द्वारा घोषित हां अथवा नहीं में होते हैं। उत्तर पत्रक पर देने होते हैं। अक्सर इस परीक्षण को पूरा करने में बीस मिनट का समय लगता है। उच्च फलांकन निम्न आत्मबोध को दर्शाता है जबकि निम्न फलांकन निम्न आत्मबोध को दर्शाता है–

परीक्षण में आत्मबोध के क्षेत्र	प्रश्न संख्या	कुल
1 शारीरिक	9,19,24,27,39,44	6
2 स्वाभाविक विशेषताएं	1,10,28,24,35	5
3 शैक्षिक स्तर	2,3,11,16,25,29,35,46	8
4 बौद्धिक स्तर	4,12,17,20,30,36,47	7
5 आदत व व्यवहार	5,13,31,40,48	5
6 भावनात्मक प्रवृत्ति	6,14,21,32,41	5
मानसिक आयु	7,15,22,26,33,37,42	7
सामाजिक–आर्थिक स्तर	8,18,23,38,43	5

वैधता–तार्किक वैधता

परीक्षण में आत्मबोध के क्षेत्र	A	B	C	D	E	F	G	H
1. शारीरिक	1.00	.20	.39	.26	.30	.28	.27	.29
2. स्वाभाविक विशेषताएं		1.00	.32	.24	.43	.37	.34	.32
3. शैक्षिक स्तर			1.00	.34	.30	.35	.31	.33
4. बौद्धिक स्तर				1.33	.22	.35	.33	.31
5. आदत व व्यवहार					1.00	.26	.23	.23
6. भावनात्मक प्रवृत्ति						1.00	.39	.31
7. मानसिक आयु							1.00	.35
8. सामाजिक–आर्थिक स्तर								1.00

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा टी मूल्य सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

सारणी संख्या–1 छात्राध्यापकों के आत्मबोध के प्रति प्राप्तांक

रा. स्कोर	आवृत्ति	प्रतिशत	स्तर
45.50	13	32ण्5	अति उत्तम
39.44	15	37ण्5	उत्तम
27.38	12	30ण्0	सामान्य
21.26	.	.	निम्न
0.20	.	.	अति निम्न

सारणी संख्या 1 में छात्राध्यापकों के आत्मबोध के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है जिसमें 45 से 50 के मध्य 32.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अंक प्राप्त किये, जो अति उत्तम स्तर का परिचायक है। 39–44 के मध्य 37.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अंक प्राप्त किये, अर्थात् 37.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों को आत्मबोध उत्तम प्रकार का है। 27 से 38 के मध्य 30 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अंक प्राप्त किये जो सामान्य स्तर का आत्मबोध रखते हैं। 21 से 26 के मध्य किसी भी छात्राध्यापक ने अंक प्राप्त नहीं किये अथ्रात निम्न स्तर का आत्मबोध नहीं पाया गया। 0 से 20 के मध्य किसी भी छात्राध्यापक ने अंक प्राप्त नहीं किये अर्थात् निम्न व अति निम्न स्तर का आत्मबोध भी नहीं पाया गया। सारणी का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि 70 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने उत्तम व अति–उत्तम व 30 प्रतिशत ने औसत स्तर के आत्मबोध को दर्शाया है।

सारणी संख्या–2 छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध के प्रति प्राप्तांक

रा. स्कोर	आवृत्ति	प्रतिशत	स्तर
45.50	2	10	अति उत्तम
39.44	10	50	उत्तम
27.38	8	40	सामान्य
21.26	.	.	निम्न
0.20	.	.	अति निम्न

सारणी संख्या 2 में छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है जिसमें 45 से 50 के मध्य 10 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने अंक प्राप्त किये, जो अति उत्तम स्तर का परिचायक है। 39–44 के मध्य 50 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने अंक प्राप्त किये, अर्थात् 50 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं को आत्मबोध उत्तम प्रकार का है। 27 से 38 के मध्य 40 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने अंक प्राप्त किये जो सामान्य स्तर का आत्मबोध रखते हैं। 21 से 26 के मध्य किसी भी छात्राध्यापिका ने अंक प्राप्त नहीं किये अर्थात् निम्न स्तर का आत्मबोध नहीं पाया गया। 0 से 20 के मध्य किसी भी छात्राध्यापिका ने अंक प्राप्त नहीं किये अर्थात् निम्न व अति निम्न स्तर का आत्मबोध भी नहीं पाया गया।

सारणी का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि 60 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने सामान्य स्तर का आत्मबोध प्रदर्शित किया। मध्य किसी भी छात्राध्यापिका ने अंक प्राप्त नहीं किये अर्थात् निम्न व अति निम्न स्तर का आत्मबोध भी नहीं पाया गया।

सारिणी संख्या–3 छात्राध्यापको एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध का प्राप्तांक

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	ज मूल्य
छात्राध्यापिकाएं	38ण्90	5ण्20	20	2ण्707
छात्राध्यापक	40ण्60	5ण्37	40	

सारणी संख्या 3 में छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध को दर्शाया गया है। छात्राध्यापिकाओं का मध्यमान 38.9 तथा प्रमाणिक विचलन 5.20 है। छात्राध्यापकों का मध्यमान 40.6 तथा प्रमाणिक विचलन 5.37 है। छात्राध्यापिकों व

छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध का टी अनुपात 2.707 पाया गया।सांख्यिकी मूल्य 0. 05 प्रतिशत पर 1.98 व 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 है जबकि गणित मूल्य 2.707 है जो कि सांख्यकी मूल्य से अधिक है।अतः शून्य परिकल्पना ''छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध को अस्वीकृत किया गया। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध में सार्थक अन्तर पाया गया जाता है।

निष्कर्ष :

1. छात्राध्यापकों के आत्मबोध के प्राप्तांकों में 70 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने उत्तम एवं अति–उत्तम एवं 30 प्रतिशत ने सामान्य स्तर आत्मबोध का परिचय दिया, अतः परिकल्पना सत्यापित हुई। अर्थात् छात्राध्यापकों का आत्मबोध उत्तम एवं अति–उत्तम औसत स्तर का है, जोकि सकारात्मक है।
2. छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध के प्राप्तांकों में 60 प्रतिशत छात्राध्यापिकाओं ने उत्तम एवं अति–उत्तम एवं 40 प्रतिशत ने सामान्य स्तर आत्मबोध का परिचय दिया, अतः परिकल्पना सत्यापित हुई। अर्थात् छात्राध्यापिकाओं का आत्मबोध उत्तम एवं अति–उत्तम औसत स्तर का है, जोकि सकारात्मक है।
3. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध का टी.मूल्य 2.707 है जो कि सांख्यकी मूल्य .05 प्रतिशत विश्वसनीय स्तर पर 1.98 एवं .01 प्रतिशत स्तर पर 2.62 से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के आत्मबोध में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सुझाव :

1. आत्मबोध विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन, उत्तेजना, अधिगम आदि को भी प्रभावित करता है, अतः आत्मबोध का उपरोक्त तत्वों के साथ ही अध्ययन कर सकते हैं।
2. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध की भी तुलना की जा सकती है।
3. विभिन्न प्रकार के विद्यालयों जैसे केन्द्रीय विद्यालय, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय आदि के विद्यार्थियों के आत्मबोध की तुलना की जा सकती है।
4. आत्मबोध के विकास में विभिन्न चरों जैसे –अधिगम दृष्टिकोण, सामाजिक तत्व, समाज की पृष्ठभूमि आदि के योगदान का भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची :

1. आत्माराम शर्मा (1993) : ''शैक्षणिक तथा मनोवैज्ञानिक मापन'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. आलपोर्ट, जी.डब्ल्यू (1935) : ''ए हैण्ड बुक ऑफ सोशल सायकोलोजी'' बार सेन्टर, क्लार्क यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. बी.धोनदियाल (1965) : ''दी एटीट्यूट ऑफ मेन एण्ड वूमेन स्टूडेंट टीचर्स'' जनरल ज्योति, आगरा, दयालबाग, डब्ल्यू.टी.सी., पी.पी. : 5,16।
4. बी.जी. भण्डारकर (1980) : ''ए स्टेडी ऑन पोलिटेक्निक टीचर्स एटीट्यूट टवर्ड प्रोफेशनल एण्ड इट्स कोरिलेट्स गर्वरमेन्ट पोलिटेक्निक, जेलगान, (टी.टी.टी. आई. भोपाल–स्थान सोरड़) एज रिफेन्स इन थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी. (न्यू देहली) एम.बी.बुच. 1987 पेज 792।